IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बिखरते परिवार और वृद्ध :एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

*डॉ० चन्दन कुमार पाण्डेय

असिस्टेंट प्रोफेसर –राजकीय महाविद्यालय

मौदहा हमीरपुर

सारांश- भारतीय समाज की संरचना भी वैश्वीकरण व विकास के नए प्रतिमान को प्राप्त करने में छिन्न भिन्न होती जा रही है। संयुक्त परिवार जो वृद्धों की देख-रेख व सेवा-शुश्रूषा का आधार स्तम्भथे, टूटते जा रहे हैं और उनके स्थान पर आर्विभूत नाभिक परिवार, परिवार के वृद्धों को स्वयं में सम्मिलित नहीं करते हैं। वृद्धों को परिवार में बोझ के रूप मे समझा जाने लगा है। अपनी देख-रेख के लिए पारिवारिक सदस्यों पर निर्भर वृद्ध अब पारिवारिक सदस्यों की उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं। उपेक्षा वृद्धों के लिये सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्या है। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमें वृद्धों को अपनी अपेक्षा के अनुरूप, पारिवारिक सदस्यों का व्यवहार नहीं प्राप्त होता है। उपेक्षा की दो स्थिति हो सकती हैं प्रथम नियोजित (Intentional) व दूसरी अनियोजित (Unintentional)। टोरंटो घोषणा पत्र (Global Prevention of Elder Abuse, 2002) में इसे निम्नवत परिभाषित किया गया है:-"वृद्धों के ऐसे सम्बन्धी जिनसे विश्वास की अपेक्षा की जाती है, उनके द्वारा एक बार या बार-बार किया जाने वाला ऐसा व्यवहार जो वृद्धों को नुकसान पहुंचाता हो या मानसिक तनाव देता हो।" वृद्धों के प्रति होने वाले दुर्व्यवहार के विभिन्न रूप हो सकते हैं-शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, यौनिक व आर्थिक आदि।

प्रस्तुत प्रपत्र में द्वितीयक स्रोतों के आधार पर बदलते पारिवारिक प्रतिमान में वृद्धों की वर्तमान दशा को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द- वृद्ध ,परिवर्तन, परिवार, समाज, प्रस्थिति, जनसँख्या |

जहाँ एक तरफ वृद्धों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है तो वहीं दूसरी तरफ औद्योगीकरण, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, प्रवास, महिलाओं में आयी जागरुकता इत्यादि कारणों से संयुक्त परिवार में बिखराव प्रारम्भ हो गया है और वे एकाकी परिवारों में परिवर्तित हो रहे हैं। इसी सम्बन्ध में अध्ययन करते हुए गीथा गोवरी व उनके सहयोगियों (2003) ने बताया कि परिवार में संरचनात्मक परिवर्तन से उसके पारिवारिक सम्बन्धों में प्रकार्यात्मक परिवर्तन आ गया है। भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ वृद्धों की सुरक्षा के लिये अन्य कोई साधन उपलब्ध नहीं है, ऐसे में वृद्धों के समक्ष भविष्य को लेकर संकट उत्पन्न हो गया है। जिस प्रस्थिति का पूर्व में यह अनुभव करते थे उसमें कभी महसूस कर रहे हैं (बाली 1995)। समाज में जहाँ एक ओर वृद्धावस्था सभ्यता की बीमारियों, गरीबी, महामारियों पर विजय को इंगित करती है (अबाया 1982) वहीं दूसरी ओर समाज में आर्थिक कार्यों से हटे इन वृद्धों को अतिरिक्त भार के रुप में भी प्रदर्शित करती है।

ब्रिटिश आगमन से ही हिन्दुओं का पारिवारिक संगठन गहरे परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। व्यक्तिगत हितों का महत्त्व बढ़ जाने, पारिवारिक सम्पत्ति में निहित व्यक्तिगत स्वार्थ के विचार ने युवाओं की प्रवृत्वि पर प्रभाव डालना प्रारम्भ किया फलस्वरुप संयुक्त परिवार का बिखराव प्रारम्भ हो गया। आर.सी. श्रीवास्तव (1994) के अनुसार जमींदारी उन्मूलन व औद्योगीकरण के प्रारम्भ होने से संयुक्त परिवार में समस्याएँ उत्पन्न हो गयी और वे केन्द्रिक परिवारों में टूटने लगे क्योंकि अधिक भूमि अब संयुक्त रुप से साथ नहीं रह सकती थी। ऐसे भूमि के विभाजन के साथ-साथ घरों में भी विभाजन हो गया। औद्योगिक क्रान्ति से पूर्व आदिम समाजों में जहाँ उत्पादन कार्य पारिवारिक समूहों द्वारा संचालित था वहीं औद्योगिक क्रान्ति के विस्तार के साथ ही प्रथमतया ग्रेट बिटेन तथा पश्चिमी यूरोप व इसके पश्चात् उत्तर अमेरिकी समाजों में नाटकीय सामाजिक परिवर्तन हुए। नवीन सामाजिक संरचनाएँ, सामाजिक मूल्य, राजनीतिक व सामाजिक व्यवस्थाएँ तथा सामाजिक प्रक्रिया विकसित हुई (महाजन व मधुरिमा 1995)। सामाजिक स्तर पर औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरुप सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था में कई परिवर्तन हुए (बर्गेस 1960, कोंगिल व होल्मस 1976)। इसके साथ ही अंग्रेजों द्वारा औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रारम्भ एवं नवीन न्याय व्यवस्था के कारण परम्परागत सम्बन्ध की संरचना में आधार भूत परिवर्तन हुए। अब युवाओं को मार्गदर्शन व सलाह के लिये वृद्धों की सहायता कम पड़ने लगी, उनका स्थान शिक्षण संस्थानों ने ले लिया, जिससे युवाओं द्वारा वृद्धों को कम महत्व दिया जाने लगा, इसकेसाथ ही नवीन न्याय व्यवस्था के आने से पंचायत का महत्व घटने लगा फलस्वरुप वृद्धों की प्रस्थिति में हास उत्पन्न हो गया।अब व्यक्ति नौकरी के लिये गांवों को छोड़कर नगरों की ओर जाने लगा जिसके फलस्वरुप पारिवारिक संघटक व सम्बन्धों की संरचना प्रभावित हुई है। मरफी (1953) के अनुसार भारतीयों ने औद्योगीकरण व व्यवसायीकरण को तो अपना लिया लेकिन उसके मूल्यों को नहीं अपनाया हेलन (1984)। फलस्वरुप परिवार में तनाव व संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। एमेसर (1959) ने अपने लेख "वृद्धों व दुर्बल के लिये कल्याणकारी सेवायें" में बताया कि औद्योगीकरण, नगरीकरण के कारण परिवारों में परिर्वतन हो रहा है (पाठक 1978)। परम्परागत संयुक्त परिवारों में हो रहे परिवर्तनों का बहुत सारे समाजशास्त्रियों ने अध्ययन किया है जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं-मुखर्जी (1977), दामले (1964), शाह (1974), ओमन (1982), राम आहूजा (1993), रॉस (1961), सिंगर (1968), चेक्की (1974) जार्ज कुरियन (1974), विक्टर डिसूजा (1974), वातुक (1974), रामू (1977), रामकृष्ण मुखर्जी (1971), कॉकलिन (1974), ड्राइवर (1962), घोष (1962), शाह (1974), इत्यादि।

संयुक्त परिवार में औद्योगीकरण व नगरीकरण के प्रभाव का अध्ययन गोरे (1968), निमकॉफ (1960) व सिंगर (1968) ने किया। परिवार के बदलते स्वरुप के लिये औद्योगीकरण सबसे महत्वपूर्ण कारक है (रैना, 1989), राममूर्ति व जमुना (1986)। पारिवारिक संरचना में परिवर्तन के लिये देसाई (1982) ने औद्योगीकरण व पारिवारिक विकास चक्र को उत्तरदायी माना है, तो वहीं मर्चेन्ट (1935), बील्स (1955), कोहेन (1961), बारनाबस (1961) ने संयुक्त परिवार में होने वाले तनावों को केन्द्रिक/एकाकी परिवार में परिवर्तित होने का मुख्य कारण माना। बम्बावाला (1991) ने अपने अध्ययन में पाया कि आद्योगीकरण, नगरीकरण व आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण सामाजिक संरचना व उसके प्रकार्यों में परिवर्तन आ गया है। पश्चिमी धर्मनिरपेक्ष शिक्षा, आधुनिक धन वाले व्यवसाय, बाजारों के विकास इत्यादि से संयुक्त परिवारों की संख्या में कमी आई है बारनाबास (1961), कोहेन (1961), लोकेश्वरी (1969) व वटुक (1971)। दुबे (1968) ने ग्रामीण संयुक्त परिवार के अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष दिया कि विवाह के पश्चात ही माता-पिता व युवा संतानों में झगड़े प्रारम्भ हो जाते हैं फलस्वरुप वे अलग रहने लगते हैं। साथ ही यह भी बताया कि संयुक्त परिवारों में यह प्रत्यक्षतः सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में परिलक्षित होता है।

संयुक्त परिवारों मे बिखराव के लिये युवाओं का प्रवास भी उत्तरदायी है (किम व ली (1983), अब्बासी व इरफान (1986), गो व पोस्ट्रोडो (1986), शान्ता कनबर्गी (2000), दाण्डेकर (1996), चेक्की (1974))। ओबेराय व सिंह ने (1983) पंजाब के अध्ययन के दौरान यही परिणाम पाया। मटियको (1974) के अनुसार परिवार के सदस्यों के अन्यत्र जाने की स्वतन्त्रता से पराम्परागत परिवार के अधिकारों में कमी आई है। उद्योगों की वृद्धि व प्रवास की स्वतन्त्रता से संयुक्त परिवार टूट रहे हैं फलस्वरुप परिवार उत्पादन इकाई से उपभोक्ता इकाई में परिवर्तित हो गया है। परिवार जो कि पूर्व में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व कर्मकाण्डीय इकाई के रुप में कार्य कर रहा था साथ ही भावनात्मक सुरक्षा भी प्रदान कर रहा था, उसमें परिवर्तन के कारण परिवार ने अपने सदस्यों को प्रदान करने वाली सुविधाओं को समाप्त कर दिया है।

आधुनिक युग के इस तीव्र गति के जीवन, पश्चिमी मूल्यों के प्रति युवाओं का बढ़ता रुझान, आधुनिकीकरण ने प्राचीन मूल्यों, आदर्शो, व्यवहार प्रतिमानों को युवाओं ने अस्वीकृत कर दिया है। वह नवीन मूल्यों, नयी जीवन शैली की ओर आकृष्ट हो रहा है। इन बदलते परिवारिक मूल्यों का अध्ययन एस० जानकीरमन ने किया है (सुधीर 2000)। अपनी उच्च आकांक्षाओं, अभिलाषाओं को पूरा करने की चाह उसे नगरों तक खींच कर ले आई क्योंकि नगरों में आय व रोजगार के विभिन्न श्रोत विद्यमान रहते हैं, फलस्वरुप वह अपने माता-पिता व परम्परागत व्यवसायों से विमुख हो रहा है। प्रारम्भ में तो वह अपनी पत्नी और बच्चों को वृद्ध माता-पिता के पास छोड़कर जाता है तथा स्वयं सदैव आता-जाता रहता है किन्तु एक बार नगरों में रहने की ठीक-ठाक व्यवस्था हो जाने पर वह अपनी पत्नी और बच्चों को भी साथ ले जाता है और वृद्ध माता-पिता को भाग्य के सहारे छोड़ जाता है। बोस व सक्सेना (1963) ने पाया कि वर्तमान में संयुक्त परिवार की अपेक्षा केन्द्रिक परिवार की ओर लोगों का रुझान अधिक है। युवाओं के अन्यत्र जाने की स्वतन्त्रता उन्हें अपने बुजुर्गों से भावनात्मक लगाव से स्वतन्त्रता प्रदान करती है (गोरे 1968:45)

शिक्षा भी संयुक्त परिवार के टूटने के लिये उत्तरदायी है। ड्राइवर (1962) ने पाया कि संयुक्त परिवार शिक्षित लोगों की अपेक्षा कम शिक्षित लोगों में अधिक प्रचलित हैं। वहीं गफ (1956), मदान (1965), सिंह (1962) ने अपने अध्ययन में पाया कि भूमि पर जनसंख्या के दबाव साथ ही शिक्षा के लिये नगरों की ओर प्रवास के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। झा व चटर्जी (1965) ने पाया कि पारिवारिक संगठन व आकार परिवर्तन की दिशा में हैं, जो कि आधुनिक शिक्षा, अधिकारों, भावनाओं पारिवारिक सदस्यों के व्यवहारों से सम्बन्धित हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि परम्परागत पारिवारिक व्यवस्था विभिन्न कारणों से विघटित या रुपान्तरित हो रही है। इस विघटन या रुपान्तरण कारण वृद्धों की जो परिवार के द्वारा देखभाल होती थी, वह व्यवस्था प्रभावित हुई है।

References

- Gowri Geetha et al. (2003) in Living Alone : Abandonment or Solidarity? in S. Sankari Pitchu By Presenting Paper in 32nd All India Sociological Conference University of Madras and Loyala College Chennai 27-29 Dec., 2006.
- Gulati Leela and S. Irudaya Rajan (1997) Women and Work in Kerala: A Comparison of 1981and 1991 Censuses Indian Jl of Gender Studies.

- (1988) Population Aspects of Aging in Kerala India, Social Development Issues Vol 13 No.3 Spring, Pp. 90-99.

- Mahajan, A. and Madhurima (1995). Family Violence and Abuse in India (Eds.) Deep and Deep publication.new Delhi
- Majumdar, D.N. (1952). Races and Culture in India Bombay : Asia Publication House.

- Damle, Y.B. (1964). The Hindu Family in Urban Setting. The Indian Jl of Social Works XXVI, April, 89-93.
- Dandekar Kumudini (1996). the Elderly in India Sage Publication, New Delhi.
- Darkhaim in Amarget Mahajan and Madhurima. Family Violence and Abuse in India (Eds) Deep and Deep Publication, New Delhi. 1995, Pp. 101.
- Desai, K.G. (1982) (Eds.). Aging in India Tata Institute of Social Sciences Bombay.
- Desai, K.G. and R.D Naik,. (1970). Report on Problems of Retired People in Greater Bombay Tata Institute of Social Sciences.
- Ramamurti, P.V. and Jamuna (1986). Self other Perceptions of Issues and Problems and Aged Women in A.P.- India" Paper Presented At the XI World Congress of Sociology of ISA New Delhi, August.
- Ramu, G.N. (1977). Family and Caste in Urban India, New Delhi.
- Ramu, P.G.N. (1977). Family and Caste in Urban India : A case study, New Delhi. Vikas Publishing house, Pvt.Ltd.
- Srivastava R.C. (1994). Problems of the Old Age Classical Publishing House Corparation New Delhi, Pp. 15.
- Sudhir, M.A. (2000) (Eds). Aging in Rural India Perspectives and Prospects Indian Publishers Distributors, Delhi.